टिप्पणी

22

साझेदारी - एक परिचय

आप एकल स्वामित्व व्यवसाय तथा इसके खातों को तैयार करने के सम्बन्ध में सीख चुके हैं। जब व्यवसाय का विस्तार होता है तो एक व्यक्ति के लिए इस विस्तार किए गये व्यवसाय के लिए पूँजी की व्यवस्था करना तथा इसका प्रबन्ध करना इसकी क्षमता से बाहर हो जाता है। इसलिए उसके प्रयत्न एवं पूँजी की दूसरे लोगों के प्रयत्न एवं पूँजी के साथ मिला लेने की आवश्यकता होती है। इससे संगठन के साझेदारी स्वरूप का उदय होता है।

व्यवसायिक लेन देनों का प्रारम्भिक प्रविष्टि की लेखा पुस्तकों में अभिलेखन उनकी खाता बही में खतौनी करना एवं वित्तीय विवरण तैयार करना एकल स्वामित्व एवं साझेदारी फर्म से भिन्न नहीं होता है। लेकिन कुछ ऐसे मामले हैं जिनका संबन्ध केवल साझेदारी फर्म से होता है तथा उनका लेखांकन अलग से किया जाता है। यह मामले हैं फर्म के लाभों का विनियोजन, विभिन्न अवसरों पर ख्याति का लेखांकना इत्यादि। इस पाठ में साझेदारी फर्मों से संबन्धित इन्हीं समस्याओं पर ध्यान दिया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात आप

- साझेदारी का अर्थ और विशेषताएं बता सकेंगे;
- साझेदारी संलेख का अर्थ समझा समझ सकेंगें;
- साझेदारी संलेख न होने की दशा में साझेदारी से संबंधित विशिष्ट विषयों के लेखे के विषय बता सकेंगे;
- पूँजी खाता का अर्थ बता सकेंगे एवं इनको तैयार कर सकेंगे;
- स्थायी पूँजी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों में अन्तर कर सकेंगे;

टिप्पणी

- पूँजी पर ब्याज एवं आहरण पर ब्याज की गणना कर सकेंगे;
- लाभ हानि विनियोजन खाते का अर्थ व उद्देश्य बता सकेंगे और इसको तैयार कर सकेंगे।
- लाभ की गारंटी हेतु समायोजन कर पाएँगे; एवं
- तुलन पत्र बनाने के बाद पाई गई अशुद्धियों हेतु समायोजन कर पाएँगे।

22.1 साझेदारी एवं साझेदारी संलेख

साझेदारी व्यवसायिक संगठन का वह स्वरूप है जिसमें दो या अधिक व्यक्ति मिल कर व्यापार आरम्भ करते है और चलाते हैं। वे लाभ और हानि का विभाजन आपसी समझौते के अनुसार करते हैं।

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 के अनुसार,

साझेदारी, व्यक्तियों के बीच आपसी सम्बन्ध को कहते हैं जिन्होंने किसी व्यापार से होने वाले लाभ को बांटने का समझौता किया है जिसे वे सभी मिलकर चलाते हैं या कोई एक उन सब की ओर से चलाता है।

उदाहरण के लिए, आपके एक मित्र ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान से बारहवीं कक्षा पास की और वह व्यापार का आरंभ करना चाहता है। उसने आप से इस कार्य को करने के लिए संपर्क किया। वह आपसे कुछ राशि एवं व्यापारिक गतिविधि में सहयोग चाहता है यदि आप दोनों मिलकर कार्य करते हैं तो यह साझेदारी का गठन होगा।

साझेदारी की विशेषताएँ निम्न हैं :

- **समझौता :** साझेदारी का गठन समझौते द्वारा होता है। यह मौखिक या लिखित हो सकता है। यह उन व्यक्तियों के बीच सम्बन्धों को परिभाषित करता है जो व्यवसाय को चलाने के लिए सहमत हुये हैं। इसमें लाभ विभाजन एवं प्रत्येक साझेदार द्वारा विनियोजित पूँजी के सम्बन्ध में लिखा जाता है। लिखित समझौते को साझेदारी संलेख कहते हैं।
- **व्यक्तियों की संख्या :** साझेदारी के गठन के लिए कम से कम दो व्यक्ति होने चाहिए। साझेदारी फर्म में साझेदारों की अधिकतम संख्या बैंकिंग कारोबार के लिए दस एवं अन्य कारोबार के लिए बीस हो सकती है
- **व्यापार :** साझेदारी का गठन किसी व्यवसाय को लाभ कमाने के उद्देश्य से चलाने के लिये किया जाता है। व्यवसाय कानून सम्मत होना चाहिए। अतः यदि दो या अधिक व्यक्ति गैर कानूनी कार्य करने के लिये सहमत होते हैं तो यह साझेदारी नहीं कही जायेगी।

टिप्पणी

- **लाभ विभाजन :** साझेदार लाभों का विभाजन निश्चित अनुपात में करने के लिए सहमत होते हैं हानि की स्थिति में सभी साझेदार इसको उसी निश्चित लाभ विभाजन अनुपात में वहन करेंगे।
- **परस्पर एजेन्सी :** प्रत्येक साझेदार अन्य साझेदारों का ऐजेन्ट होता है। प्रत्येक साझेदार फर्म एवं अन्य सभी साझेदारों को अपने कार्यों से अनुबंधित कर देता है। प्रत्येक साझेदार अन्य साझेदारों के कार्यों के लिए उत्तरदायी होगा।
- **असीमित दायित्व :** नाबालिक को छोड़कर शेष सभी साझेदारों का दायित्व असीमित होता है। उनकी निजी सम्पत्ति भी उनके दायित्व के लिए उत्तरदायी होती है। यदि फर्म की सम्पत्ति फर्म के ऋणों का भुगतान करने के लिये पर्याप्त नहीं है तो साझेदारों की निजी सम्पत्ति लेनदारों के दावों को चुकता करने के लिए उपयोग की जायेगी।
- **प्रबन्ध :** सभी साझेदारों को व्यवसाय में प्रबन्ध कार्य करने का अधिकार है। अतः वे चाहे तो प्रबन्ध कार्य किसी एक या अधिक साझेदारों को करने के लिए अधिकृत कर सकते हैं।
- **हितो/अंशों का हस्तान्तरण :** कोई भी साझेदार अपने अंशों/हितों का हस्तांतरण अन्य साझेदारों की अनुमति के बिना अपने परिवार या अन्य व्यक्तियों को नहीं कर सकता।

महत्वपूर्ण शब्द

- **साझेदारी संलेख :** समझौता साझेदारी के गठन का आधार है। समझौते का लिखित होना साझेदारी फर्म का आधार विलेख है। इसमें व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धी शर्तों का उल्लेख होता है। इसमें साझेदारों के मध्य सम्बन्धों को लिखा जाता है इसे साझेदारी संलेख कहते हैं।

  प्रत्येक फर्म अपना साझेदारी संलेख बना सकती है, जिसमें साझेदारों के अधिकार, कर्त्तव्य और दायित्व का विस्तृत वर्णन किया जाता है। इससे साझेदारों के बीच व्यवसाय के संचालन से सम्बन्धित मतभेदों को दूर करने में सहायता मिलती है।

- **साझेदारी संलेख में लिखी बातें :** साझेदारी संलेख में समान्यतः निम्न बातों का उल्लेख होता है :

  (i) साझेदारी फर्म का नाम तथा पता

  (ii) व्यवसाय की प्रकृति तथा उद्देश्य

  (iii) प्रत्येक साझेदार का नाम एवं पता

टिप्पणी

(iv) लाभ विभाजन का अनुपात

(v) प्रत्येक साझेदार द्वारा विनियोजित पूँजी

(vi) पूँजी पर ब्याज की दर, यदि देना है

(vii) साझेदारों को वेतन, यदि देना है

(viii) साझेदार द्वारा फर्म को दिये गये ऋण व अग्रिम पर ब्याज की दर

(ix) साझेदारों द्वारा आहरण एवं उस पर ब्याज की दर यदि कोई है

(x) साझेदारी के पुर्नगठन जैसे कि प्रवेश पर, सेवानिवृति पर, साझेदार की मृत्यु पर परिसम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन एवं ख्याति के मूल्यांकन की विधि

(xi) पंच निर्णय द्वारा मतभेदों का निपटारा

(xii) साझेदार के अवकाश ग्रहण या मृत्यु पर खातों का निपटारा

(xiii) वे परिस्थितियां जिनमें साझेदारी का समापन किया जा सकता है

(xiv) फर्म के समापन पर खातों का निपटान।

- **साझेदारी संलेख के न होने पर :** साझेदारी संलेख में साझेदारों के अधिकार कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में नियम एवं शर्तों को लिखा जाता है। साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में कुछ विषयों पर विवाद हो सकता है जैसे कि लाभ का विभाजन अनुपात, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, ऋण पर ब्याज एवं साझेदारों को वेतन। ऐसी स्थिति में साझेदारी अधिनियम में दी गई व्यवस्था लागू होगी :

  (i) लाभ का विभाजन : साझेदार बराबर लाभ के अधिकारी होंगे।

  (ii) पूँजी पर ब्याज : पूँजी पर ब्याज नहीं दिया जायेगा।

  (iii) आहरण पर ब्याज : साझेदारों के आहरण पर ब्याज नहीं लगाया जायेगा।

  (iv) साझेदारों द्वारा ऋण पर ब्याज : साझेदारों द्वारा फर्म को दिये गये ऋण पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।

  (v) साझेदार को वेतन व कमीशन : किसी भी साझेदार को व्यवसाय का प्रबन्ध करने के लिए कोई वेतन व कमीशन नहीं दिया जायेगा।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 22.1

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए :

(i) साझेदारी का गठन करने के लिए कम से कम ..... व्यक्तियों का होना आवश्यक है।

(ii) साझेदारी का गठन ..... द्वारा होता है।

(iii) साझेदारी के लिये समझौता ..... या ..... हो सकता है।

(iv) साझेदारी में लिखित समझौते को ..... कहा जाता है।

(v) प्रत्येक साझेदार का दायित्व ..... होता है।

II. आशा और राहुल एक फर्म में साझेदार हैं यदि यहाँ पर कोई साझेदारी संलेख नहीं है तो आप निम्न का निपटारा कैसे करेंगे। अपने उत्तर हाँ या न में दीजिए :

(i) आशा ₹ 3,000 प्रति माह वेतन चाहती है। क्या वह वेतन की माँग कर सकती है?

(ii) राहुल ने फर्म को अग्रिम ऋण दिया हुआ है वह 6% वार्षिक की दर से ब्याज की मांग करता है। क्या यह उसे मिलना चाहिये?

(iii) आशा और राहुल ने ₹ 50,000 प्रत्येक ने पूँजी के लिये अभिदान किया है, राहुल, आशा से अधिक लाभ की मांग करता है। क्या यह उसे मिलना चाहिये?

(iv) आशा ने फर्म के लिये अनुबंध प्राप्त किया। वह अनुबंध की राशि का 2% कमीशन की मांग करती है। क्या उसे इस प्रकार का कमीशन मिलना चाहिये?

(v) राहुल प्रत्येक माह ₹ 500 निजी प्रयोग के लिये निकालता है। आशा राहुल के आहरण पर ब्याज लगाना चाहती है। क्या यह लिया जाये?

22.2 पूँजी खाता : अर्थ एवं बनाना

साझेदार अपने भाग की पूँजी का व्यापर में अभिदान करते हैं। इसका लेखा संबन्धित खातों में किया जाता है जिसे पूँजी खाता कहते हैं। मान लीजिए दो साझेदार हैं अ और ब तो यहाँ पर अ का पूँजी खाता एवं ब का पूँजी खाता होगा। इन खातों को दो प्रकार से रखा जा सकता है।

टिप्पणी

(अ) स्थिर पूँजी खाता

अतिरिक्त पूँजी लागाये जाने पर या चालू वर्ष के दौरान स्थायी आहरण को छोड़कर स्थिर पूँजी खाते में, पूँजी खाते का अंतिम शेष इसके आरम्भिक शेष के समान होगा। पूँजी खातों से संबंधित मदें जैसे कि पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज एवं लाभ का भाग आदि का लेखा पूँजी खाते में किया जाता है। इस स्थिति में प्रत्येक साझेदार के लिए इन मदों का लेखा करने के लिए एक अलग खाता खोला जाता है। यह खाता चालू खाते के नाम से जाना जाता है। चालू खाता नाम एवं जमा शेष दिखा सकता है। स्थायी पूँजी खाता एवं चालू पूँजी खाते का प्रारूप निम्न है :

साझेदार का पूँजी खाता

नाम — जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	बैंक (पूँजी का स्थायी आहरण)		xxx		शेष आ/ला. (पूँजी अभिदान का आरम्भिक शेष)		xxx
	शेष आ/ले (अंतिम शेष)		xxx		बैंक (अतिरिक्त पूँजी लगाई)		xxx
			xxx				xxx

साझेदार का चालू खाता

नाम — जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	राशि (₹)
	शेष आ/ला. (नाम आरंभिक शेष की)		xxx		शेष आ/ला. (जमा आरम्भिक शेष)		xxx
	आहरण खाता		xxx		वेतन		xxx
	आहरण पर ब्याज खाता		xxx		पूँजी पर ब्याज		xxx
	लाभ हानि विनियोजन (हानि में भाग के लिए)		xxx		लाभ हानि विनियोजन (हानि में भाग के लिए)		xxx
	शेष आ/ले (जमा अंतिम की स्थिति में)				शेष आ/ले (जमा अंतिम की स्थिति में)		
			xxx				xxx

टिप्पणी

(ब) परिवर्तनशील पूँजी खाता

जब पूँजी राशि के अतिरिक्त पूँजी खाते से संबन्धित अन्य मदों जैसे कि पूँजी पर ब्याज, आहरण, शुद्ध लाभ एवं शुद्ध हानि आदि को इस खाते में लिखा जाता है जिसके लिए प्रत्येक साझेदार के लिए अलग पूँजी खाता तैयार किया जाता है इसे परिवर्तनशील पूँजी खाता कहते हैं। इस स्थिति में इन समायोजनों लेखा करने के लिए एक अलग खाते की आवश्यकता नहीं है।

किसी भी सूचना की अनुपस्थिति में, पूँजी खातों को इस विधि से तैयार किया जायेगा।

साझेदार का पूँजी खाता

नाम जमा

तिथि	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (₹)*	*तिथि*	*विवरण*	*रो.पृ. सं.*	*राशि (₹)*
	शेष आ/ला. (नाम आरंभिक शेष की स्थिति में)		xxx		शेष आ/ला. (जमा आरंभिक शेष की स्थिति में)		xxx
	आहरण		xxx		बैंक (अतिरिक्त पूँजी लाई गई)		xxx
	आहरण पर ब्याज		xxx		वेतन खाता		xxx
	लाभ हानि विनियोजन (हानि के भाग से)		xxx		लाभ हानि विनियोजन (हानि के भाग से)		xxx
	शेष आ/ले (अंतिम जमा शेष की स्थिति में)		xxx		शेष आ/ले (अंतिम नाम शेष की स्थिति में)		xxx
			xxx				xxx

उदाहरण 1

रोहन एवं मोनिका एक फर्म में साझेदार हैं। 31 दिसम्बर 2013 को निम्न सूचनाएँ उपलब्ध कराई गई :

	रोहन (₹)	*मोनिका (₹)*
पूँजी (1.01.2013 को)	40,000	30,000
आहरण	3,000	2,000
पूँजी पर ब्याज	2,000	1,500
आहरण पर ब्याज	360	180
लाभ का भाग	5,000	4,000

टिप्पणी

प्रत्येक साझेदार के लिए पूँजी खाता तैयार करें यदि पूँजी (अ) स्थायी (ब) परिवर्तनशील हो।

हल

(अ) स्थायी पूँजी खाता

पूँजी खाता

नाम — जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
2013 दिस. 31	शेष आ/ले		40,000	30,000		शेष आ/ला.		40,000	30,000
			40,000	30,000				40,000	30,000
						शेष आ/ला.		40,000	30,000

चालू खाता

नाम — जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
2013 दिस. 31	आहरण		3,000	2,000		पूँजी पर ब्याज		2,000	1,500
	आहरण पर ब्याज		360	180		लाभ हानि			
	शेष आ/ले		3,640	3,320		विनियोजन खाता		5,000	4,000
	(अंतिम शेष)								
			7,000	5,500				7,000	5,500
						शेष आ/ला.		3,640	3.320
						(प्रारंभिक शेष)			

(ब) परिवर्तनशील पूँजी खाता

पूँजी खाता

नाम — जमा

तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)	तिथि	विवरण	रो.पृ. सं.	रोहन (₹)	मोनिका (₹)
2013 दिस. 31	आहरण		3,000	2,000	2013 जन.1	शेष आ/ला. (प्रारंभिक शेष)		40,000	30,000
	आहरण पर ब्याज		360	180	दिस.31	पूँजी पर ब्याज		2,000	1,500
	शेष आ/ले		43,640	33,320		लाभ हानि			
	(अंतिम शेष)					विनियोजन		5,000	4,000
			47,000	35,500				47,000	35,500
					2014				
					जन.1	शेष आ/ला.		43,640	33,320

टिप्पणी

स्थायी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों में अंतर

स्थायी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों के बीच अंतर के मुख्य बिन्दु निम्न है:

स्थायी पूँजी एवं परिवर्तनशील पूँजी खातों के बीच अंतर

क्र. सं.	*अंतर का आधार*	*स्थायी पूँजी खाता*	*परिवर्तनशील पूँजी खाता*
1.	खातों की संख्या	प्रत्येक साझेदार के लिए दो अलग खाते रखे जाते हैं जैसे कि पूँजी खाता एवं चालू खाता	प्रत्येक साझेदार के लिए एक खाता रखा जाता है जैसे कि पूँजी खाता।
2.	समायोजन	सभी समायोजनों का लेखा चालू खाते में किया जाता है। पूंजी खाते में नहीं किया जाता।	समायोजनों का लेखा सीधे पूँजी खाते में किया जाता है कोई चालू खाता नहीं खोला जाता।
3.	स्थायी शेष	पूँजी खातों का शेष विशेष परिस्थितियों को छोड़कर नहीं बदलता।	पूँजी खातों का शेष अवधि दर अवधि परिवर्तनशील होता है।
4.	शेष	पूँजी खाता प्रत्येक स्थिति में केवल जमा शेष दर्शायेगा।	अवधि के अंत में पूँजी खाता नाम या जमा शेष दर्शा सकता है।

पाठगत प्रश्न 22.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए।

i. स्थायी पूँजी खाता हमेशा केवल ..... शेष दिखाता है।

ii. ..... पूँजी खाता नाम या जमा शेष दिखा सकता है।

iii. यदि पूँजी ..... होती है तब प्रत्येक साझेदार के लिये दो खाते रखे जाते हैं।

iv. पूँजी पर ब्याज को चालू खाते के ..... पक्ष में दिखाया जाता है।

v. आहरण पर ब्याज को चालू खाते के ..... पक्ष में दिखाया जाता है।

टिप्पणी

22.3 पूँजी पर ब्याज एवं आहरण पर ब्याज का लेखाकरण

पूँजी पर ब्याज

अब हम पूँजी पर ब्याज की गणना के संबंध में पढ़ेंगे। जैसा कि आप जानते हैं पूँजी पर ब्याज तब ही दिया जाता है जब साझेदारी संलेख में इसका प्रावधान हो। यदि इसका प्रावधान है तो ब्याज की दर का निर्धारण साझेदारों द्वारा किया जाता है। पूँजी पर ब्याज साझेदारों के पूँजी खातों के आरम्भिक शेष पर लगाया जायेगा। जब अतिरिक्त पूँजी लाई जाती है या कुछ पूँजी का स्थायी आहरण किया जाता है तब ब्याज की गणना विशेष अवधि के दौरान व्यापार में प्रयोग की गई राशि पर की जायेगी। ब्याज को व्यय माना जायेगा। इसको फर्म के लाभों में से लिया जायेगा। इसकी निम्न रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगी।

पूँजी पर ब्याज के लिए

पूँजी पर ब्याज खाता		नाम
	साझेदार का पूँजी खाता से	(व्यक्तिगत)
(पूँजी पर ब्याज पूँजी खाते में जमा करने पर)		

ब्याज की गणना प्रत्यक्ष में की जायेगी अर्थात साधारण ब्याज की गणना मूल राशि को लेकर अवधि एवं ब्याज की दर के अनुसार की जायेगी। विकल्प के तौर पर ब्याज की गणना गुणनफल विधि (Product method) द्वारा भी की जा सकती है जैसे कि मूल राशि को माह के गुणनफल में बदल कर जो कि उन माह की संख्या पर निर्भर करता है जितने महीने मूल राशि व्यापार में प्रयोग की गई है। ब्याज की गणना माह के ब्याज की दर को लेकर की जायेगी। निम्न उदाहरण में दोनों विधियों द्वारा ब्याज की गणन की गई है :

उदाहरण 2

जनवरी 1, 2013 को शिल्पा और संजू क्रमशः ₹ 1,00,000 एवं ₹ 1,60,000 की पूँजी के साथ साझेदार हैं। शिल्पा जुलाई 1, 2013 को ₹ 30,000 एवं अक्टूबर 31, 2013 को ₹ 20,000 की अतिरिक्त पूँजी लाई। 2013 को समाप्त वर्ष के लिए पूँजी पर ब्याज की गणना करें। ब्याज की दर 9% वार्षिक है।

हल

पूँजी पर ब्याज (शिल्पा)

₹ 1,00,000 पर 12 महीने के लिए 9% की दर से = 1,00,000 × 9/100 × 12/12

= ₹ 9,000

टिप्पणी

₹ 30,000 पर 6 महीने के लिए 9% की दर से = 30,000 × 9/100 × 6/12
= ₹ 1,350

₹ 20,000 पर 2 महीने के लिए 9% की दर से = 20,000 × 9/100 × 2/12
= ₹ 300

शिल्पा की पूँजी पर कुल ब्याज = ₹ 9,000 + ₹ 1350 + ₹ 300
= ₹ 10,650

गुणनफल विधि (Product method) द्वारा

राशि (₹)	माह	गुणनफल
100000	12	12,00,000
30000	6	1,80,000
20000	2	40,000
कुल गुणनफल		14,20,000

पूँजी पर ब्याज $14,20,000 \times \frac{9}{100} \times \frac{1}{12}$ = ₹ 10,650

पूँजी पर ब्याज (संजू)

₹ 1,60,000 पर 12 महीने के लिए 9% की दर से = 1,60,000 × 9/100 × 12/12
= ₹ 14,400

गुणनफल विधि द्वारा = 1,60,000 × 12 = 19,20,000

= $\frac{19,20,000 \times 9}{12 \times 100}$ = ₹ 14,400

आहरण पर ब्याज (Interest on Drawing)

जब साझेदार घरेलू प्रयोग के लिए रोकड़ फर्म से निकलता है तब इस प्रकार रोकड़ निकालने को आहरण कहा जाता है। यदि साझेदारी संलेख में आहरण पर ब्याज लगाने का प्रावधान है तो फर्म साझेदार से आहरण पर ब्याज ले सकती है। आहरण पर ब्याज फर्म के लिए अधिलाभ है इसकी गणना निर्धारित दर से की जाती है आहरण पर ब्याज की राशि को लाभ हानि समायोजन खाते में जमा और साझेदार के पूँजी खाते/चालू खाते में (व्यक्तिगत) नाम किया जायेगा। रोजनामचा प्रविष्ट निम्न प्रकार होगी :

साझेदार का पूँजी/चालू खाता नाम
आहरण पर ब्याज खाता से
(साझेदार के पूँजी खाते में आहरण पर ब्याज लगाने पर)

टिप्पणी

आहरण पर ब्याज की गणना

आहरण पर ब्याज की गणना की दो विधियाँ है :

- साधारण औसत विधि
- गुणनफल विधि

1. साधारण औसत विधि

एक निश्चित राशि का आहरण प्रत्येक माह/अर्द्ध वार्षिक/वार्षिक किया जा सकता है। ब्याज की गणना उस अवधि के लिए की जायेगी जितने समय राशि का प्रयोग साझेदार द्वारा निजी उद्देश्य के लिए किया गया है। ब्याज की राशि की गणना करने की विभिन्न परिस्थितियाँ नीचे दिखाई गई हैं :

I. जब निश्चित राशि को समान समय अंतराल में निकाला जाता है

एक निश्चित राशि को साझेदार द्वारा समान समय अंतराल में निकाला जाता है जैसे कि प्रत्येक माह, प्रत्येक तिमाही। इस स्थिति में कुल समय अवधि की गणना, राशि के माह के आरम्भ माह के मध्य या माह के अंत में निकालने पर निर्भर करती है।

उदाहरण के लिए मनीषा ने दिसम्बर 31, 2013 को समाप्त वर्ष में हर माह निजी उपयोग के लिए ₹ 1,000 प्रति माह निकाला ब्याज 12% वार्षिक दर से लगाया जायेगा। विभिन्न स्थितियों में औसत अवधि व आहरण पर ब्याज की गणना इस प्रकार होगी:

(अ) जब राशि को अवधि के आरम्भ में निकाला जाता है

आहरण की तिथि	निकाली गई राशि	अवधि (माह में)
1 जनवरी 2013	1,000	12
1 फरवरी 2013	1,000	11
1 मार्च 2013	1,000	10
1 अप्रैल 2013	1,000	9
1 मई 2013	1,000	8
1 जून 2013	1,000	7
1 जुलाई 2013	1,000	6
1 अगस्त 2013	1,000	5
1 सितम्बर 2013	1,000	4
1 अक्टूबर 2013	1,000	3
1 नवम्बर 2013	1,000	2
1 दिसम्बर 2013	1,000	1
कुल	12,000	78 माह

टिप्पणी

जब राशि को माह के आरम्भ में निकाला जाता है औसत अवधि की गणना इस प्रकार होगी

औसत अवधि = महीने का योग/12
= 78 महीने/12
= 6½ महीने

आहरण पर ब्याज = $12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{11}{2} \times \frac{1}{12}$
= ₹ 780

(ब) जब राशि अवधि के अंत में निकाली जाती है

आहरण की तिथि	*निकाली गई राशि*	*अवधि (माह में)*
31 जनवरी 2013	1,000	11
28 फरवरी 2013	1,000	10
31 मार्च 2013	1,000	9
30 अप्रैल 2013	1,000	8
31 मई 2013	1,000	7
30 जून 2013	1,000	6
31 जुलाई 2013	1,000	5
31 अगस्त 2013	1,000	4
30 सितम्बर 2013	1,000	3
31 अक्टूबर 2013	1,000	2
30 नवम्बर 2013	1,000	1
31 दिसम्बर 2013	1,000	0
	12,000	66 माह

जब राशि को माह के अंत में निकाला जाता है औसत अवधि की गणना इस प्रकार की जाएगी :

औसत अवधि = महीने का योग/12
= 66 महीने/12
= 5½ महीने

आहरण पर ब्याज = $12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{11}{2} \times \frac{1}{12}$
= ₹ 660

टिप्पणी

(स) जब राशि को माह के मध्य में निकाल जाता है

आहरण की तिथि	निकाली गई राशि	अवधि (माह में)
15 जनवरी 2013	1,000	11.5
14 फरवरी 2013	1,000	10.5
15 मार्च 2013	1,000	9.5
15 अप्रैल 2013	1,000	8.5
15 मई 2013	1,000	7.5
15 जून 2013	1,000	6.5
15 जुलाई 2013	1,000	5.5
15 अगस्त 2013	1,000	4.5
15 सितम्बर 2013	1,000	3.5
15 अक्टूबर 2013	1,000	2.5
15 नवम्बर 2013	1,000	1.5
15 दिसम्बर 2013	1,000	0.5
	12,000	72 माह

जब राशि को माह के मध्य में निकाला जाता है औसत अवधि की गणना इस प्रकार की जायेगी

औसत अवधि = महीने का योग/12
= 72 महीने/12
= 6 महीने

आहरण पर ब्याज = $12,000 \times \frac{12}{100} \times \frac{6}{12}$
= ₹ 720

(द) निश्चित राशि को समान समय अंतराल में निकालने पर

यदि साझेदार द्वारा राशि को प्रत्येक तिमाही के आरम्भ में निकाला जाता है। वर्ष के दौरान निकाली गई कुल राशि पर ब्याज की गणना 7½ महीनों के लिए की जायेगी।

उदाहरण 3

सन्नी एवं हिमांशु एक फर्म में साझेदार है लाभ का विभाजन समान अनुपात में करते हैं। वित्तीय वर्ष 2013 के दौरान प्रत्येक तिमाही के आरम्भ में सन्नी ने ₹ 20,000 निकाले। यदि आहरण पर 8% वार्षिक दर से ब्याज लगया जाता है वर्ष के अंत में लगाई जाने वाली ब्याज की राशि की गणना करें।

टिप्पणी

हल

आहरण पर ब्याज की गणना को दिखाती तालिका

तिथि	*राशि (₹)*	*समय अवधि*	*ब्याज (₹)*
जनवरी 1, 2013	20,000	12 माह	$20,000 \times \frac{8}{100} \times \frac{12}{12}$ = ₹ 1,600
अप्रैल 1, 2013	20,000	9 माह	$20,000 \times \frac{8}{100} \times \frac{9}{12}$ = ₹ 1,200
जुलाई 1, 2013	20,000	6 माह	$20,000 \times \frac{8}{100} \times \frac{6}{12}$ = ₹ 800
अक्टूबर 1, 2013	20,000	3 माह	$20,000 \times \frac{8}{100} \times \frac{3}{12}$ = ₹ 400
योग	80,000		₹ 4,000

विकल्प के तौर पर लेखा वर्ष के दौरान निकाली गई कुल राशि पर भी ब्याज की गणना की जा सकती है जो कि इस स्थिति में ₹ 80,000 है 7½ माह के लिए

$$\frac{(12+9+6+3)}{4} = 7\frac{1}{2} = \frac{15}{2}$$

अतः

$$\text{आहरण पर ब्याज} = \text{निकाली गई कुल राशि} \times \text{दर} \times 7\frac{1}{2} \times \frac{1}{12}$$

$$= 80,000 \times \frac{8}{100} \times \frac{15}{2} \times \frac{1}{12} = ₹\ 4,000$$

(ई) जब निश्चित राशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है

जब राशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है तब ब्याज की राशि की गणना कुल आहरण पर 4½ माह के लिये की जायेगी। पिछले उदाहरण में यदि राशि को प्रत्येक तिमाही के अंत में निकाला जाता है औसत अवधि के लिये ब्याज की गणना 4½ माह के लिये की जायेगी। ब्याज की गणना निम्न प्रकार होगी :

आहरण पर ब्याज की गणना को दिखाती तालिका

तिथि	*राशि (₹)*	*समय अवधि*	*ब्याज (₹)*
मार्च 31	20,000	9 माह	$20,000 \times \frac{8}{100} \times \frac{9}{12}$ = ₹ 1,200

टिप्पणी

जून 30	20,000	6 माह	$20,000\times\frac{8}{100}\times\frac{6}{12}$ = ₹ 800
सितम्बर 30	20,000	3 माह	$20,000\times\frac{8}{100}\times\frac{3}{12}$ = ₹ 400
दिसम्बर 31	20,000	0 माह	₹ 0
योग	**80,000**	**18 माह**	**₹ 2,400**

विकल्प के तौर पर ₹ 80,000 पर ब्याज की गणना 4½ माह की अवधि के लिये की जायेगी

$$\frac{(9+6+3+0)}{4}=4\frac{1}{2}=\frac{9}{2}$$

आहरण पर ब्याज = ₹ $80,000\times\frac{8}{100}\times\frac{9}{2}\times\frac{1}{12}$ = ₹ 2,400

गुणनफल विधि (Product Method)

जब विभिन्न राशि को विभिन्न समय अंतराल में निकाला जाता है, गुणनफल विधि के अंतर्गत प्रत्येक आहरण के लिये, निकाली गई राशि को वित्तीय वर्ष के दौरान शेष अवधि से गुणा किया जायेगा। अवधि की गणना निकाली गई राशि की तिथि से लेखांकन वर्ष के अंतिम दिन तक होगी। गणना किये गये गुणनफल का योग करके एवं निर्धारित दर से 1 माह का ब्याज गुणनफल के योग पर लगाया जायेगा। ब्याज की गणना को आगे उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है।

आहरण पर ब्याज की गणना को दिखाती तालिका

तिथि	*राशि (₹)*	*समय अवधि*	*गुणनफल (₹)*
जनवरी 1, 2013	20,000	12 माह	2,40,000
अप्रैल 1, 2013	20,000	9 माह	1,80,000
जुलाई 1, 2013	20,000	6 माह	1,20,000
अक्टूबर 1, 2013	20,000	3 माह	60,000
योग	**80,000**		**6,00,000**

आहरण पर ब्याज = गुणनफल का योग × ब्याज दर × 1/12
= ₹ 6,00,000 × 8/100 × 1/12
= ₹ 4,000

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 22.3

I. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द/शब्दों से कीजिए :

i. पूँजी पर ब्याज को साझेदारों के पूँजी खाते के ..... किया जाता है।

ii. आहरण पर ब्याज को साझेदारों के पूँजी खाते के ..... में लिखा जाता है।

iii. साझेदारों के पूँजी खातों के ..... पर ब्याज लगाया जाता है।

iv. जब राशि को प्रत्येक माह के आरम्भ में निकाला जाता है, ब्याज लगाने की औसत अवधि ..... होगी।

v. जब गुणनफल विधि का प्रयोग किया जाता है, तब ब्याज की गणना ..... के लिये की जायेगी।

II. रीमा एवं अनीश अप्रैल 2013 को क्रमशः ₹ 50,000 एवं ₹ 80,000 की पूँजी से साझेदार हैं रीमा ने 1 जनवरी 2014 को ₹ 50,000 की अतिरिक्त पूँजी लगाई। मार्च 31, 2014 को 10% वार्षिक की दर से पूँजी पर ब्याज की गणना करें।

III. आशू ने वर्ष अवधि के प्रत्येक माह के अंत में ₹ 2,000 व्यवसाय से निकाले। आहरण पर ब्याज की गणना 10% वार्षिक की दर से करें।

22.4 लाभ-हानि विनियोजन खाता : अर्थ एवं बनाना

लाभ-हानि विनियोजन खाता फर्म के लाभ-हानि खाते का विस्तार रूप है। फर्म के लाभ को साझेदारों में उनके लाभ हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। लेकिन उनके आबंटन से पूर्व इनमें समायोजन किये जाने की आवश्यकता होती है। इस खाते में सभी समायोजन किये जाते हैं, जैसे कि साझेदार का वेतन, साझेदार का कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि। यह समायोजन आबंटन हेतु लाभ की राशि को कम कर देता है। इस समायोजित लाभ को साझेदारों में उनके लाभ-हानि अनुपात में बांट दिया जाता है। इसे तैयार करने के लिये सर्वप्रथम लाभ-हानि खाते के शेष को इस खाते में हस्तांतरित किया जाता है। लाभ-हानि विनियोजन खाते को बनाने के लिए की जाने वाली रोजनामचा प्रविष्टियां नीचे दी गई है :

1. लाभ हानि खाते का शेष लाभ हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर

(अ) शुद्ध लाभ की स्थिति में

लाभ-हानि खाता		नाम
	लाभ-हानि विनियोजन खाता से	

(शुद्ध लाभ को लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

टिप्पणी

(ब) शुद्ध हानि की स्थिति में

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम
लाभ-हानि खाते से
(शुद्ध हानि का लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरण)

2. *पूँजी पर ब्याज के लिये*

पूँजी पर ब्याज को हस्तांतरित करने के लिए

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम
पूँजी पर ब्याज खाता से
(पूँजी पर ब्याज को लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

3. *आहरण पर ब्याज लगाने के लिए*

आहरण पर ब्याज का हस्तांतरण करने के लिए

आहरण पर ब्याज खाता नाम
लाभ-हानि विनियोजन खाता से
(आहरण पर ब्याज को लाभ-हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

4. *साझेदार को वेतन के लिये*

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम
वेतन खाता से
(वेतन को लाभ-हानि समायोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

5. *साझेदार को कमीशन के लिए*

कमीशन को हस्तांतरित करने के लिए

लाभ-हानि विनियोजन खाता नाम
कमीशन खाता से
(कमीशन को लाभ-हानि समायोजन खाते में हस्तांतरित करने पर)

6. *शेष को सामान्य संचय में हस्तांतरण करने के लिए*

लाभ हानि विनियोजन खाता नाम
सामान्य संचय खाता से
(शेष का सामान्य संचय खाते में हस्तांतरण)

7. *विनियोजन पर लाभ एवं हानि के भाग के लिये*

(क) यदि लाभ हो

लाभ हानि विनियोजन खाता नाम
साझेदारों का पूँजी/चालू खाता से
(शेष का सामान्य संचय में हस्तांतरण)

टिप्पणी

(ब) यदि हानि हो

साझेदारों का पूँजी/चालू खाता नाम
लाभ हानि विनियोजन खाता से
(हानि का पूँजी/चालू खाते में हस्तांतरण)

लाभ हानि विनियोजन खाते का प्रारूप निम्न प्रकार होगा

लाभ हानि विनियोजन खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
लाभ हानि खाता (यदि हानि हो)	xxx	लाभ हानि खाता (यदि लाभ हो)	xxx
साझेदारी की पूँजी पर ब्याज खाता	xxx	आहरण पर ब्याज	xxx
साझेदारों का वेतन खाता	xxx	साझेदारों के पूँजी खाते (हानि का विभाजन)	xxx
साझेदारों का कमीशन खाता	xxx		
साझेदारों द्वारा ऋण पर ब्याज खाता	xxx		
साझेदारों के पूँजी खाते (लाभों का विभाजन)	xxx		
	xxx		xxx

उदाहरण 4

मोनिका एवं कृष्णा क्रमशः ₹ 80,000 एवं ₹ 1,00,000 की पूँजी के साथ साझेदार हैं। वे निम्न शर्तों पर सहमत हुये :

(अ) लाभ का एक समान विभाजन होगा।

(ब) पूँजी पर 9% वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।

(स) आहरण पर 6% वार्षिक की दर से ब्याज लगाया जायेगा।

(द) कृष्णा को 600 रु. प्रतिमाह वेतन दिया जायेगा

(च) वर्ष के दौरान मोनिका ने ₹ 8,000 एवं कृष्णा ने ₹ 6,000 निकाले।

दिसम्बर 31, 2013 को समाप्त वर्ष में लाभ ₹ 56,000 हुआ। आप लाभ हानि विनियोजन खाता तैयार करे।

टिप्पणी

हल

कार्यकारी टिप्पणी

पूँजी पर ब्याज :

मोनिका = ₹ 80,000 × 9/100
= ₹ 7,200

कृष्णा = ₹ 1,00,000 × 9/100
= ₹ 9,000

आहरण पर ब्याज :

मोनिका द्वारा आहरण = ₹ 8,000

ब्याज = ₹ 8,000 × 6/100
= ₹ 480

कृष्णा द्वारा आहरण = ₹ 6,000

ब्याज = ₹ 6,000 × 6/100
= ₹ 360

लाभ हानि विनियोजन खाता

नाम — जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
पूँजी खातों पर ब्याज :			लाभ व हानि		56,000
मोनिका	7,200		आहरण पर ब्याज		
कृष्णा	9,000	16,200	मोनिका	480	
कृष्णा को वेतन		7,200	कृष्णा	360	840
लाभ का साझेदारों के पूँजी खाते में हस्तांतरण :					
मोनिका	16,720				
कृष्णा	16,720	33,440			
		56,840			**56,840**

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 22.4

i. उन मदों की सूची बनाइये जो कि सामन्यता लाभ-हानि विनियोजन खाते के नाम पक्ष में दर्शायी जाती है।

ii. यदि लाभ-हानि खाते का नाम शेष है लाभ हानि विनियोजन खाते में राशि का हस्तांतरण करने के लिए क्या लेखा प्रविष्टि की जायेगी?

iii. जब आहरण पर ब्याज को लाभ हानि विनियोजन खाते में हस्तांतरित किया जाता है, तब बहियों में क्या रोजनामचा प्रविष्टि की जायेगा?

22.5 लाभ की गारन्टी

कभी–कभी एक साझेदार फर्म में प्रवेश करता है। वह व्यवसाय में न्यूनतम लाभ की गारन्टी चाहता है। ऐसी गारन्टी बाहरी साझेदार को भी दी जा सकती है। ऐसी गारन्टी प्रवेश पाने वाले साझेदार को इस प्रकार दी जा सकती है।

a) सभी पुराने साझेदारों की सहमति अनुपात में, या

b) कुछ पुराने साझेदारों के या किसी एक पुराने साझेदार के

जब सभी साझेदार, एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी देंगे, तब हमें निम्न दो राशियों की गणना अलग से करेंगे।

1) गारन्टी साझेदार के लाभ का हिस्सा उसे लाभ विभाजन अनुपात में

2) गारन्टी साझेदार की न्यूनतम लाभ की गारन्टी की राशि

उपर्युक्त दोनों में से जो भी अधिक हो, वह ही उस साझेदार को दिया जाता है। लाभ का शेष (कुल लाभ में से गारन्टी वाले साझेदार को दिया जाने वाला लाभ को घटाकर) शेष साझेदारों को उन के लाभ अनुपात में बाँट दिया जाता है।

जब नए साझेदार का लाभ अनुपात गारन्टी राशि से अधिक हो तो लाभ की गारन्टी राशि के बजाय उसको लाभ का वास्तविक हिस्सा दिया जाएगा।

उदाहरण 5 (फर्म के द्वारा एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी देना)

X और Y का लाभ अनुपात 2 : 1 है और 1 अप्रैल, 2009 से वे Z को लाभ मे 1/10 हिस्से के साथ न्यूनतम गारन्टी ₹ 16,000 के साथ प्रवेश करता है। X और Y पहले की तरह लाभ में हिस्सा रखते हैं। 31 मार्च, 2011 वर्ष के अंत में लाभ की राशि ₹ 10,00,000 थी लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार कीजिए।

टिप्पणी

हल :

लाभ-हानि समायोजन खाता
31 मार्च, 2011

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
साझेदारों की पूँजी			लाभ–हानि खाता से वर्ष का लाभ	10,00,000
X	5,60,000			
Y	2,80,000			
Z	1,60,000	10,00,000		
		10,00,000		10,00,000

नोट : Z को निम्न में से अधिक प्राप्त होगा

(i) लाभ का हिस्सा उससके लाभ विभाजन अनुपात में

₹ 10,00,000 का भाग

$$₹\ 10,00,000 \times \frac{1}{10} = ₹\ 1,00,000$$

(ii) न्यूनतम लाभ की गारन्टी ₹ 1,60,000

इस प्रकार ₹ 10,00,000 में से ₹ 1,60,000 (जो अधिक है) Z को पहले दिया जाएगा तथा शेष ₹ 84,000 का (₹ 10,00,000 – ₹ 1,60,000) X और Y में उनके लाभ अनुपात 2 : 1 में बाँट दिया जाएगा।

प्रभाव

X को ₹ 56,00,000 मिलेंगे (₹ 8,40,000 का 2/3 भाग) : Y को ₹ 2,80,000 (₹ 8,40,000 का 1/3 भाग) और Z को ₹ 1,60,000 (न्यूनतम लाभ) मिलेंगे।

जब साझेदारों में (एक कुछ स्थिति में एक से अधिक साझेदार) न्यूनतम लाभ की गारन्टी होती है। समायोजन साझेदारों के पूंजी अनुपात में होगा

निम्नलिखित तथ्यों का अनुसार करें–

1. साझेदारों के बीच में लाभ उनके लाभ विभाजन अनुपात में बाँटे।
2. यदि गारन्टी साझेदार का लाभ का हिस्सा कम रह जाता है, तब अन्तर की राशि को साझेदारों के वास्तविक हिस्से में से घटाकर, गारन्टी साझेदार के हिस्से में जोड़ दिया जाएगा।

टिप्पणी

यदि दो या अधिक साझेदार गारन्टी देते हैं, तब जितना कम है (कमी) उसे उन साझेदारों की सहमति अनुपात में या उनके लाभ अनुपात में जैसी सहमति हो।

उदहारण 6 (एक साझेदार के द्वारा लाभ की गारन्टी)

A, B और C एक फर्म में साझेदार है। उनका लाभ विभाजन 5 : 3 : 2 है। जैसा कि C को ₹ 50,000 तक की प्रत्येक वर्ष न्यूनतम लाभ की गारन्टी दी गई। यदि कोई भी कमी रह जाने पर B इसे पूरा करेगा। दो वित्तीय वर्षों के अन्त का लाभ निम्न 31 मार्च 2010 और 2011 को ₹ 2,00,000 और ₹ 3,00,000 थे।

दो वर्षों का लाभ–हानि समायोजन खाते तैयार कीजिए।

हल :

लाभ-हानि समायोजन खाते

31 मार्च 2010 के वित्तीय वर्ष का

नाम जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
लाभ हस्तांतरण का			लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	2,00,000
A की पूँजी खाता (5/10)		1,00,000		
B का पूँजी खाता (3/10)	60,000			
– C का हस्तांतरण	10,000	50,000		
C का पूँजी खाता (2/10)	40,000			
+ B से हस्तांरण	10,000	50,000		
		2,00,000		2,00,000

लाभ-हानि समायोजन खाता

31 मार्च 2011 वित्तीय वर्ष के अन्त में

नाम जमा

विवरण	*राशि*	*विवरण*	*राशि*
लाभ हस्तांतरण का		लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	3,00,000
A की पूँजी खात से (5/10)	1,50,000		
B का पूँजी खाता से (3/10)	90,000		
C का पूँजी खाता से (2/10)	60,000		
	3,00,000		3,00,000

नोट : C का हिस्सा न्यूनतम गारन्टी लाभ से अधिक है, इसलिए किसी भी समायोजन की आवश्यकता नहीं है।

टिप्पणी

उदाहरण 7 न्यूनतम लाभ की गारन्टी (फर्म के एक साझेदार से दूसरे साझेदार के लिए)

P, Q और R ने 1 अप्रैल 2010 को एक साझेदारी में 5 : 3 : 2 के अनुपात में अपना लाभ–हानि अनुपात के लिए प्रवेश किया। 'P' 'R' के लाभ के हिस्से की गारन्टी देता है। पूँजी पर ब्याज @ 5% प्रतिवर्ष लगाने के पश्चात उसे किसी भी वर्ष ₹ 30,000 से कम लाभ नहीं दिया जाएगा।

पूँजी निम्न है : A – ₹ 3,20,000; B – ₹ 2,00,000 और C – ₹ 1,60,000। 31 मार्च 2011 के वित्तीय वर्ष के अन्त में लाभ ₹ 1,59,000 था (पूँजी पर ब्याज लगाने से पूर्व)। वित्तीय वर्ष 31 मार्च 2011 के अंत में लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार कीजिए।

हल

लाभ-हानि समायोजन खाता

(31 मार्च, 2011 के वित्तीय वर्ष के अंत में)

नाम जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
पूँजी पर ब्याज खाते का			लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	1,59,000
P	16,000			
Q	10,000			
R	8,000	34,000		
शेष नीचे लाए		1,25,000		
		1,59,000		1,59,000
लाभ का हिस्सा			शेष नीचे ले गए	1,25,000
P : 1,25,000 का 5/10	62,500			
– गारन्टी का समायोजन	5,000	57,500		
Q : 1,25,000 का 2/10		37,500		
R : 1,25,000 का 2/10	25,000			
+ गारन्टी का समायोजन	5,000	30,000		
		1,25,000		1,25,000

उदाहरण 8

M और N का लाभ विभाजन अनुपात 3 : 2 का था। फर्म में 'O' उनका मैनेजर जो ₹ 24,000 वेतन लेता था और शुद्ध लाभ का 5% कमीशन वेतन और कमीशन काटने के पश्चात है। उन्होंने उसे 1 अप्रैल 2010 को साझेदारी में 1/8 लाभ के लिए प्रवेश देते है।

31 मार्च 2011 वर्ष के अंत में लाभ ₹ 4,44,000 था। लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार कीजिए।

टिप्पणी

हल :

लाभ-हानि समायोजन खाता
31 मार्च 2011 वित्तीय वर्ष के अन्त का

नाम जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
लाभ का हस्तांतरण				
M का पूंजी खाते का	2,40,000			
घटाए : O का हस्तांतरण	–4,600	2,35,400		
N का पूंजी खाते का	1,60,000			
घटाए : O में हस्तांतरण	6,900	1,53,100		
O का पूंजी खाते का	44,000			
जोड़ : A से	4,600			
B से	6,900	55,500		
		4,44,000		4,44,000

कार्यरत नोट :

1. वर्ष का लाभ = 4,44,000

   'O' साझेदार का अनुपात (1/8 x 4,44,000) = 55,500

   घटाए : 'O' को वेतन दिया = 24,000

   कमीशन $\frac{5}{105}$ (₹ 4,44,000 – ₹ 24,000) = 20,000

   44,000

   कमी = 11,500

   कमी को M और N को 2 : 3 से लेना है।

   M सहन करेगा = $11,500 \times \frac{2}{5} = 4,600$

   N सहन करेगा = $11,500 \times \frac{3}{5} = 6,900$

2. M और N को लाभ होगा (₹ 4,44,000 – O का अनुपात ₹ 44,000)

   = ₹ 4,00,000

   M का अनुपात = ₹ $4,00,000 \times \frac{2}{5}$ = ₹ 2,40,000 – कमी का अनुपात

   N का अनुपात = ₹ $4,00,000 \times \frac{3}{5}$ = ₹ 1,60,000 – कमी का अनुपात

टिप्पणी

उदाहरण 9 (साझेदार के द्वारा न्यूनतम लाभ की गारन्टी फर्म को और फर्म के द्वारा साझेदार न्यूनतम लाभ की गारन्टी)

साझेदार के द्वारा न्यूनतम लाभ की गारन्टी फर्म को और चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट A, B और C एक साझेदारी में उनके लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 होगा। जिसमें निम्नलिखित समायोजनाएं है।

i) C का हिस्सा ₹ 3,00,000 प्रतिवर्ष से कम की लाभ गारन्टी होगी।

ii) B गारन्टी देता है। पांच सालों के दौरान सकल औसत फीस उसके द्वारा कमाई इस व्यवसाय में लाएगा (औसत ₹ 5,00,000 होगी)।

साझेदारी के पहले पांच वर्षों का लाभ (31 मार्च 2011 वर्ष के अन्त में) ₹ 15,00,000 है। फर्म में B की समल फीस ₹ 3,20,000 है।

इससे लाभ–हानि समायोजन खाता तैयार करना है। (उपर्युक्त प्रभाव के पश्चात)

हल

लाभ-हानि समायोजन खाता

31 मार्च 2011 वर्ष के अंत में

नाम जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
लाभ का हस्तांतरण			लाभ–हानि खाते से (शुद्ध लाभ)	15,00,000
A का पूंजी खाते का	8,40,000		B के पूंजी खाते से	1,80,000
घटाएं : C की कमी का हस्तातंरण	12,000	8,28,000		
B के पूंजी खाते का	5,60,000			
घटाएं : C की कमी का हस्तांतरण	8,000	5,52,000		
C के पूंजी खाते का	2,80,000			
+ A से	12,000			
B से	8,000	3,00,000		
		16,80,000		16,80,000

रफ कार्य

1.	साझेदारी के पहले वर्ष का लाभ	15,00,000
	जोड़ : B के द्वारा गारन्टी फीस और वास्तविक फीस का अन्तर (₹ 5,00,000 – ₹ 3,20,000)	1,80,000
		16,80,000

टिप्पणी

फर्म की सकल फीस का कार्यक्रम

A का अनुपात = ₹ $16,80,000 \times \frac{3}{6}$ = ₹ 8,40,000

B का अनुपात = ₹ $16,80,000 \times \frac{2}{6}$ = ₹ 5,60,000

C का अनुपात = ₹ $16,80,000 \times \frac{1}{6}$ = ₹ 2,80,000

2. C की न्यूनतम गारन्टी ₹ 3,00,000 है। कमी की राशि ₹ 20,000 को A और B 3 : 2 के अनुपात में सहन करेंगे।

A का लाभ अनुपात = ₹ 8,40,000 − ₹ 12,000 = ₹ 8,28,000

B का लाभ अनुपात = ₹ 5,60,000 − ₹ 8,000 = ₹ 5,52,000

C का लाभ अनुपात = ₹ 2,80,000 + ₹ 12,000 (A) + ₹ 8,000 (B) = ₹ 3,00,000

इस संदर्भ में, एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की गारन्टी, एक फर्म द्वारा और साझेदारों द्वारा भी दी जाती है। पहले गारन्टी फर्म देती है। उसके बाद साझेदारों के प्रभावित हुए लाभों की गारन्टी देते हो यह निम्न उदाहरण से स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण 10 (फर्म और साझेदारों द्वारा गारन्टी देना)

P, Q, R और S साझेदारी का लाभ–हानी अनुपात 4 : 3 : 2 : 1 है। उनकी पूंजी 1 अप्रैल 2012 को क्रमशः ₹ 3,00,000; ₹ 2,50,000; ₹ 1,50,000 और ₹ 1,00,000 है।

फर्म ने S को लाभ अनुपात पूंजी पर ब्याज को छोड़कर ₹ 2,50,000 से कम नहीं की गारन्टी देता है। R का लाभ अनुपात पूंजी पर ब्याज और वेतन को जोड़कर ₹ 2,60,000 से कम नहीं की गारन्टी P देता है। 31 मार्च 2012 का वर्ष का लाभ ₹ 9,00,000 पूंजी पर ब्याज @ 10% और R का वेतन @ ₹ 10,000 मासिक देने से पहले था।

लाभ–हानि समायोजन खाता लाभों को बाँटने के बाद का बनाओ।

हल

लाभ-हानि समायोजन खाता

31 मार्च 2014 के वित्तिय वर्ष के अंत में

नाम जमा

विवरण		*राशि*	*विवरण*	*राशि*
पूंजी पर ब्याज			लाभ–हानि खाते से (लाभ)	9,00,000
P (₹ 3,00,000 x 10/100)	30,000			
Q (₹ 2,50,000 x 10/100)	25,000			
R (₹ 1,50,000 x 10/100)	15,000			
S (₹ 1,00,000 x 10/100)	10,000	80,000		

टिप्पणी

लाभ का अनुपात				
(₹ 9,00,000 – ₹ 80,000				
– ₹ 1,20,000 = ₹ 7,00,000)				
P 4/10 x 7,00,000	2,80,000			
– कमी फर्म के द्वारा सहन				
(1,80,000 x 4/9)	80,000			
R के द्वारा सहन कमी	25,000	1,75,000		
Q ₹ 7,00,000 x 3/10	2,10,000			
– कमी सहन (फर्म)	60,000	1,50,000		
R ₹ 7,00,000 x 2/10	1,40,000			
– कमी (फर्म)				
(1,80,000 x 2/9)	40,000			
	1,00,000			
+ P से कमी को पूरा किया	25,000	1,25,000		
S ₹ 7,00,000 x 1/10	70.000			
+ कमी को पूरा किया				
(P, Q और R)	1,80,000	2,50,000		
		9,00,000		9,00,000

कार्यरत नोट :

1. फर्म की कमी की गणना

S का लाभ अनुपात पूंजी पर ब्याज को छोड़कर फर्म ने गारन्टी दी		2,50,000
घटाए : S का लाभ अनुपात (₹ 7,00,000 x 1/10)		70,000
		1,80,000

2. P और R से पूर्ति की कमी की गणना

R का लाभ अनुपात (₹ 7,00,000 x 2/10)		1,40,000
घटाए : फर्म की कमी में R का अनुपात (₹ 1,80,000 x 2/9)		40,000
		1,00,000
जोड़ : पूंजी पर ब्याज	15,000	
वेतन	1,20,000	1,35,000
		2,35,000
P से कमी की पूर्ति		25,000
R का अनुपात पूंजी पर ब्याज और वेतन को जोड़कर और P द्वारा गारन्टी पर		2,60,000

टिप्पणी

पूर्व समायोजनाऐं (पूंजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज, वेतन और लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन)

कभी–कभी वित्तीय वर्ष के अन्त में साझेदारों के खाते बन्द करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि खातों में कुछ गलतियाँ या भूलचूक हो गई। इस परिस्थिति में पुराने खातों में बदलाव करने के बजाय अगले साल की आर्थिक चिट्ठा में समायोजन प्रविष्टि से अशुद्धि और भूलचूक जैसी गलती का सुधार हो जाता है। प्रायः निम्न प्रकार की प्रविष्टि बनाई जाती है।

i. पूंजी पर और आहरण पर ब्याज में भूलचूक।

ii. साझेदारों के मध्य गलत अनुपात में लाभ विभाजन।

iii. जिस साझेदार के पुरानी तिथि से प्रभावी लाभ विभाजन अनुपात में बदलाव।

iv. किसी साझेदार को वेतन या कमीशन में भूलचूक।

उदाहरण 11

P, Q और R लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 में साझेदार है। अन्तिम खाते बनाने के पश्चात वह ज्ञात हुआ कि आहरण पर ब्याज लगाना भूल गए। साझेदारों के आहरण पर ब्याज P – ₹ 500, Q – ₹ 360 और R – ₹ 200 था। आवश्यक समायोजना के लिए जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

हल

P के आहरण पर ब्याज	=	₹ 500
Q के आहरण पर ब्याज	=	₹ 360
R के आहरण पर ब्याज	=	₹ 200
साझेदारों से आहरण पर कुल ब्याज	=	₹ 1060

₹ 1060 के राशि फर्म की आय है। लेकिन इसे पहले वर्ष लाभ–हानि खाते के क्रेडिट से रिकार्ड नहीं था। अतः पहले वर्ष का लाभ अब बढ़ जाएगा। अतः यह लाभ ₹ 1060 साझेदारों में उनके लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 में विभाजित हो जाएगा। जो कि P – ₹ 265, Q – ₹ 177 और R – ₹ 88 की राशि होगी।

द्वारा समायोजन

		P	*Q*	*R*	*कुल*
आहरण पर ब्याज	नाम	500	360	200	1060
₹ 1,060 का विभाजन	जमा	530	354	176	1060
अंतर		30 जमा	6 नाम	24 नाम	

टिप्पणी

अतः समायोजित प्रविष्टि होगी

जर्नल प्रविष्टि

तिथि	विवरण		जमा राशि	नाम राशि
	P का पूंजी खाता	नाम	6	
	Q का पूंजी खता	नाम	24	
	R के पूंजी खाते से			30
	(पहले वर्ष के खातों में आहरण पर ब्याज से प्रविष्टि जो भूल गए)			

उदहारण 12

A, B और C साझेदार अपना लाभ–हानि अनुपात 3 : 2 : 1 है। अन्तिम खाते बनाने के पश्चात यह ज्ञात हुआ कि आहरण पर @ 5% ब्याज नहीं लगाया। साझेदारों के आहरण निम्न थे। A – ₹ 75,000; B – ₹ 60,000 आवश्यक समायोजित जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

हल

आहरण पर ब्याज की गणना : क्योंकि आहरण की तिथि नहीं दी गई, ब्याज 6 माह का निकाला जाएगा।

A : ₹ 75,000 पर 5% (6 माह)	=	₹ 1,875
B : ₹ 63,000 पर 5% (6 माह)	=	₹ 1,575
C : ₹ 60,000 पर 5% (6 माह)	=	₹ 1,500
		₹ 4,950

समायोजना

		A	B	C	कुल
आहरण पर ब्याज	नाम	1,875	1,575	1,500	4,950
₹ 4,950 का विभाजन (3 : 2 : 1)	जमा	2,475	1,650	825	4,950
		600 जमा	75 जमा	675 नाम	

अतः समायोजित प्रविष्टि होगी

जर्नल प्रविष्टि

तिथि	विवरण		जमा राशि	नाम राशि
	C का पूंजी खाता	नाम	675	
	A का पूंजी खता से			600
	B के पूंजी खाते से			75
	(आहरण पर ब्याज में भल का समायोजन)			

टिप्पणी

उदाहरण 13

M और N एक फर्म में 3 : 2 के अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी पूंजी ₹ 2,00,000 और ₹ 3,00,000 है। साझेदारी संविदा के अनुसार निम्न हैं–

i. पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष

ii. आहरण पर ब्याज @ 12% प्रतिवर्ष

31.3.2014 के वित्तीय वर्ष के अंत में, M प्रत्येक माह के अंत में ₹ 1,000 का आहरण करता है और N प्रत्येक माह के शुरू में ₹ 2,000 का आहरण करता है। M के आहरण पर ब्याज की गणना नहीं की गई।

M के आहरण पर ब्याज की गणना करो तथा इसके लिए समायोजित जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

हल

M के आहरण पर ब्याज की गणना।

वर्ष में कुल आहरण = ₹ 1,00 x 12 = 12,000

जब माह के अंत में समान राशि का आहरण किया जाता है तो ब्याज की गणना $5\frac{1}{2}$ माह के औसत अवधि से होगी।

$$\text{आहरण पर ब्याज} = 12{,}000 \times \frac{12}{100} \times \frac{5.5}{12} = ₹\ 660$$

समायोजन

		M	*N*	*कुल*
आहरण पर ब्याज	नाम	660	--	660
₹ 660 का विभाजन (3 : 2)	जमा	396	264	660
अन्तर		264	264	
		नाम	जमा	

समायोजन प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	M का चालू खाता जमा	264	
	N का पूंजी खाते से		264
	(आहरण पर ब्याज के भूल का समायोजन)		

टिप्पणी

उदाहरण 14

X, Y और Z जिनका लाभ–हानि विभाजन अनुपात 5 : 4 : 3 है। उनकी पूंजी 1 अप्रैल 2013 को ₹ 5,00,000; ₹ 4,00,000 और ₹ 2,00,000 थी। 31 मार्च 2014 को अन्तिम खाते तैयार करने के पश्चात यह पाया गया कि साझेदारी सहमति के अनुसार पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष। Y का वार्षिक वेतन ₹ 60,000 और Z का वेतन ₹ 70,000 था, दिए बिना ही लाभ वितरित कर दिया गया। सभी साझेदारी अगले वर्ष के शुरूआत में समायोजित प्रविष्टि करने के लिए सहमत हो गए। ब्याज आर्थिक चिट्ठे में बदलाव करने की अपेक्षा/जर्नल प्रविष्टि कीजिए यदि पूंजी स्थायी नहीं हो तो।

हल

समायोजन

		X	Y	Z	कुल
पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष		50,000	40,000	20,000	1,10,000
वेतन		--	60,000	70,000	1,30,000
भुगतान वाली कुल राशि	जमा	50,000	1,00,000	90,000	2,40,000
₹ 2,40,00 की फर्म हानि का विभाजन 5 : 4 : 3 में	नाम	1,00,000	80,000	60,000	2,40,000
		50,000 नाम	20,000 जमा	30,000 जमा	--

जर्नल प्रविष्टि

31 मार्च 2014

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
मार्च 31	X का पूंजी खाता जमा	50,000	
	Y का पूंजी खाते का		20,000
	Z के पूंजी खाते का		30,000
	(पूंजी पर ब्याज और वेतन समायोजित प्रविष्टि की भूल)		

उदाहरण 15

राम और रहीम एक फर्म में 7 : 5 के अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी सम्पत्ति ₹ 10,00,000 और ₹ 7,00,000 थी। साझेदारी संविदा निम्न देती है–

i. पूंजी पर ब्याज @ 12% प्रतिवर्ष

टिप्पणी

ii. राम का वार्षिक वेतन ₹ 72,000 तथा रहीम ₹ 500 प्रतिमाह का वेतन दिया जाता है।

31 मार्च 2014 का वर्ष के अंत में लाभ ₹ 5,04,000 जिसे समान अनुपात में बाँट लिया गया। समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

हल

समायोजन

		राम	रहीम	कुल
पूंजी पर ब्याज	जमा	1,20,000	84,000	2,04,000
वेतन	जमा	72,000	60,000	1,32,000
पूंजी पर ब्याज और वेतन दर के बाद लाभ होगा ₹ 5,04,000 - ₹ 2,04,000 - ₹ 1,32,000 = ₹ 1,68,000। यह उनके लाभ–हानि अनुपात 7 : 5 होगा		98,000	70,000	1,68,000
शुद्ध राशि जो प्राप्त होनी चाहित	जमा	2,90,000	2,14,000	5,04,000
घटाए : लाभ जो समान अनुपात में बँटा	नाम	2,52,000	2,52,000	2,52,000
शुद्ध प्रभाव		38,000 जमा	38,000 नाम	

समायोजित प्रविष्टि

तिथि	विवरण	जमा राशि	नाम राशि
2014 अप्रै. 1	रहीम का पूंजी खाता जमा राम का चालू खाता से (पूँजी पर ब्याज, वेतन और लाभ का गलत बंटवारे की प्रविष्टि)	38,000	38,000

उदाहरण 16

P, Q और R एक फर्म में 2 : 3 : 5 के लाभ हानि अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी पूंजी ₹ 5,00,000; ₹ 10,00,000 और ₹ 20,00,000 थी। वर्ष 2014 में पूंजी पर ब्याज @ 12% की बजाय 10% क्रेडिट कर दिया गया। आवश्यक समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

टिप्पणी

हल

समायोजन

		P	Q	R	कुल
ब्याज का अधिक्य	नाम	10,000	20,000	40,000	70,000
अनुपात 2 : 3 : 5 में विभाजन	जमा	14,000	21,000	35,000	70,000
शुद्ध प्रभाव		4,000 जमा	1,000 जमा	5,000 नाम	

समायोजित प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	R का चालू खाता जमा	5,000	
	P का चालू खाते से		4,000
	Q के चालू खाते से		1,000
	(ब्याज के अधिक्य का समायोजन किया)		

उदाहरण 17 (पूंजी पर ब्याज की कमी का सुधार)

अमर, अकबर और एन्थनी एक फर्म में 2 : 1 : 2 के अनुपात में साझेदार है। उनकी स्थायी सम्पत्ति ₹ 30,00,000; ₹ 10,00,000 और ₹ 20,00,000 है। वर्ष 2014 में पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष की बजाय 9% प्रतिवर्ष लगाया गया। ब्याज लगाने से पूर्व का लाभ ₹ 25,00,000 था। आवश्यक समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

हल

समायोजन

		अमर	अकबर	एन्थनी	कुल
ब्याज की कमी	जमा	30,000	10,000	20,000	60,000
2 : 1 : 1 के अनुपात में विभाजन	नाम	24,000	12,000	24,000	60,000
शुद्ध प्रभाव		6,000 जमा	2,000 नाम	4,000 नाम	

समायोजित प्रविष्टि

31 मार्च 2014

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	अकबर का चालू खाता जमा	2,000	

टिप्पणी

	एन्थनी का चालू खाते से	4,000	
	अमर के चालू खाते से		6,000
	(.....)		

उदाहरण 18

A, B और C एक फर्म में साझेदार है। 1 अप्रैल 2013 को उनकी पूंजी ₹ 3,00,000; ₹ 1,50,000 और ₹ 1,50,000 था।

i. C को ₹ 3,00,000 प्रतिवर्ष पारिश्रमिक दिया जाता है।
ii. पूंजी पर 5% प्रतिवर्ष ब्याज दिया जाएगा
iii. लाभ को 2 : 2 : 1 के अनुपात में बांटा जाएगा।

उपर्युक्त समायोजनाओं को नजर अंदाज करते हुए 31 मार्च 2014 को वर्ष के अंत में लाभ ₹ 1,80,000 था जो कि तीनों में समान अनुपात में बांट दिया गया।

अशुद्धि का शोधन करते हुए समायोजन प्रविष्टि कीजिए। समस्त क्रियाओं को स्पष्ट दर्शाइए।

हल

समायोजन

	A	B	C	कुल
C को पारिश्रमिक जमा	--	--	30,000	30,000
पूंजी पर ब्याज जमा	15,000	7,500	7,500	30,000
पारिश्रमिक और पूंजी पर ब्याज देने के बाद का लाभ ₹ 1,80,000 - ₹ 30,000 - ₹ 30,000 = ₹ 1,20,000 यह लाभ–हानि के 2 : 2 : 1 के अनुपात में बंटेगे।	48,000	48,000	24,000	1,20,000
शुद्ध राशि की प्राप्ति जमा	63,000	55,500	61,500	1,80,000
घटाए : लाभ जो कि समान अनुपात में बांटा जा चुका	60,000	60,000	60,000	1,80,000
	3,000 जमा	4,500 नाम	1,500 जमा	

समायोजन प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	B का पूंजी खाता जमा	4,500	
	A का पूंजी खाते का		3,000

टिप्पणी

	C के पूंजी खाते का (पारिश्रमिक पूंजी पर ब्याज और गलत लाभ का बंटवारा का समायोजन)		1,000

उदाहरण 19

X, Y और Z लाभ अनुपात 2 : 2 : 1 के अनुपात में है। Z चाहता है कि वह X और Y से समान अनुपात में है और आगे वह चाहता है कि गत तीन वर्षों के लाभ से लाभ अनुपात के बदलाव में कोई प्रभाव नहीं होता। X और Y को कोई आपत्ति नहीं है। गत तीन वर्षों के लाभ क्रमशः ₹ 60,000; ₹ 40,000 और ₹ 50,000 था। गत तीन वर्षों के लाभ से समायोजित प्रविष्टि कीजिए।

हल

समायोजन

	X	Y	Z
तीन वर्षों का कुल लाभ 60,000 + 40,000 + 50,000 = 1,50,000			
यह लाभ 2 : 2 : 1 के अनुपात में विभाजित हो चुका है	60,000	60,000	80,000
यदि लाभ को समान अनुपात में बांटा गया 1,50,000 / 3 = 50,000	50,000	50,000	50,000
	10,000 नाम	10,000 नाम	30,000 जमा

उपर्युक्त सारणी से यह स्पष्ट है कि X और Y दोनों ₹ 60,000 प्राप्त करते हैं, जबकि प्रत्येक को ₹ 50,000 प्राप्त होने थे। इसलिए X और Y दोनों ₹ 10,000 प्रत्येक Z के पक्ष में त्याग करते है।

निम्नलिखित समायोजन प्रविष्टि इस उद्देश्य के लिए की जाएगी

समायोजन प्रविष्टि

तिथि	*विवरण*	*जमा राशि*	*नाम राशि*
	X का पूंजी खाता जमा Y का पूंजी खाता जमा Z के पूंजी खाते का (अधिक राशि X और Y को दी गई जो कि अब सही की गई)	10,000 10,000	 20,000

टिप्पणी

उदाहरण 20

राम, मोहन और सोहन एक फर्म में साझेदार थे। 31 मार्च 2014 के वित्तीय वर्ष के अन्त में पूंजी पर ब्याज @ 10% प्रतिवर्ष लगाना भूल गए। उनके स्थायी पूंजी जिन पर ब्याज की गणना करनी थी वो निम्न हैं।

राम ₹ 10,00,000; मोहन ₹ 8,00,000; सोहन ₹ 7,00,000

आवश्यक समायोजन जर्नल प्रविष्टि कीजिए।

हल

3 वर्षों के ब्याज की गणना –

A : 10,00,000 पर 10% (तीन वर्षों का)	3,00,000
B : 8,00,000 पर 10% (तीन वर्षों का)	2,40,000
C : 7,00,000 पर 10% (तीन वर्षों का)	2,10,000
	7,50,000

समायोजन

		राम	मोहन	सोहन	कुल
पूंजी पर ब्याज ₹ 75,000 को समान अनुपात में बंटा गया।	जमा	3,00,000	2,40,000	2,10,000	7,50,000
	नाम	2,50,000	2,50,000	2,50,000	7,50,000
अन्तर		50,000 जमा	10,000 नाम	40,000 नाम	

समायोजन प्रविष्टि

31 मार्च 2014

तिथि	*विवरण*		*जमा राशि*	*नाम राशि*
	मोहन का चालू खाता	जमा	10,000	
	सोहन का चालू खाता	जमा	40,000	
	राम के चालू खाते का			50,000
	(तीन वर्षों का सुधारात्मक पूंजी पर ब्याज में भूल का समायोजन किया गया)			

नोट : जब पूंजी स्थायी होती है तो चालू खातों में डेबिट और क्रेडिट किया जाएगा।

टिप्पणी

आपने क्या सीखा

- **साझेदारी की विशेषताएँ हैं :** (i) समझौता; (ii) व्यक्तियों की संख्या; (iii) व्यवसाय; (iv) लाभ का विभाजन; (v) असीमित दायत्वि; (vi) प्रबन्धन; (vii) सहयोग संस्था; (viii) हित का हस्तांतरण

- **साझेदारी संलेख (Partnership Deed) :** समझौते का लिखित रूप वह प्रलेख है जिसमें व्यापार को चलाने के नियम एवं शर्तों का एवं साझेदारों के बीच संबंध का उल्लेख होता है। यदि यहाँ पर कोई साझेदारी संलेख नहीं है या कुछ विषयों पर यह मौन है तब साझेदारी अधिनियम लागू होता है। ये विषय हैं : (i) लाभ का विभाजन; (ii) पूँजी पर ब्याज; (iii) आहरण पर ब्याज; (iv) साझेदारों को वेतन व कमीशन; (v) साझेदारों के ऋण पर ब्याज

- **पूँजी खाता :** व्यवसाय में साझेदार द्वारा दिया गया अभिदान पूँजी कहलता है। यह पूँजी स्थायी या परिवर्तनशील हो सकती है।

  (अ) स्थायी पूँजी खाता : प्रत्येक साझेदार के लिए दो खाते रखे जाते है जैसे कि पूँजी खाता व चालू खाता।

  (ब) परिवर्तनशील पूँजी खाता : प्रत्येक साझेदार के लिए केवल एक ही खाता रखा जाता है जैसे कि पूँजी खाता।

- **लाभ-हानि विनियोजन खाता (Profit and Loss Appropriation Account) :** इस खाते के द्वारा सभी समायोजन किये जाते है जैसे कि साझेदारों को वेतन, साझेदारों को कमीशन, पूँजी पर ब्याज, आहरण पर ब्याज आदि।

- **लाभ की गारन्टी :** इस संदर्भ में एक साझेदार को न्यूनतम लाभ की राशि की गारन्टी दी जाती है। यदि उसका लाभ का अनुपात कम है तो भी उसको गारंटी की राशि दी जाएगी। इस कमी की पूर्ति को या तो एक साझेदार या सभी साझेदार वहन करेंगे किसी भी अनुपात में। यदि कोई सहमति नहीं है तो बचे हुए साझेदार अपने पुराने लाभ–हानि अनुपात में देंगे। यदि वास्तविक लाभ का हिस्सा गारन्टी राशि से अधिक है, तब उसको वास्तविक हिस्सा ही दिया जाएगा।

- **पूर्व समायोजन :** यदि वार्षिक खाते बन्द करने के पश्चात यह ज्ञात होता है कि कुछ अशुद्धियाँ, तो स्वीकार होती हो या कुछ भूल से हो जती है। इन सभी अशुद्धियों को सुधारात्मक समायोजन प्रविष्टि से होती है। ये प्रविष्टि आर्थिक चिट्ठा में दखल अंदाजी किए बिन की जाती है। ये प्रविष्टि गत में हुई गलती को सुधार के लिए होती है। इसलिए ये गत समायोजनाओं के नाम से जानी जाती है।

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

1. साझेदारी की विशेषताओं का वर्णन करें।
2. किसी साझेदारी संलेख की अनुपस्थिति में कौन-कौन से प्रावधान लागू होगे?
3. स्थायी और परिवर्तनशील पूँजी खातों के मध्य अंतर करे।
4. लाभ-हानि विनियोजन खाता क्यों बनाया जाता है?
5. अ और ब एक फर्म में साझेदार है जनवरी 1, 2013 को उनकी पूँजी क्रमशः ₹ 3,00,000 और ₹ 2,00,000 है। वर्ष के दौरान उनका आहरण ₹ 3,000 प्रति माह प्रत्येक का है। पूँजी पर 6% का ब्याज दिया जाता है। वर्ष का लाभ ₹ 4,00,000 है। पूँजी पर ब्याज की गणना करे जब कि पूँजी खाते स्थिर है।
6. एक्स और वाई बराबर के साझेदार हैं। वे ₹ 4,000 प्रति माह आहरण करते हैं। निम्न स्थितियों में पूँजी पर 4% वार्षिक की दर से ब्याज की गणना करें:

   (i) यदि वे प्रत्येक माह के आरंभ में आहरण करते हैं।

   (ii) यदि वे प्रत्येक माह के अंत में आहरण करते हैं।

   (iii) यदि वे प्रत्येक माह के मध्य में आहरण करते हैं।
7. नमन और असमिता जनवरी 1, 2006 को ₹ 1,00,000 प्रत्येक की पूँजी के साथ व्यापार आरम्भ करते हैं। आहरण पर ब्याज क्रमशः ₹ 200 व ₹ 100 है। इनको पूँजी पर 8% वार्षिक ब्याज दिया जाता है। नमन को ₹ 2,000 प्रति माह वेतन दिया जाता है वे ब्याज व वेतन से पहले ₹ 94,000 का लाभ अर्जित करते हैं। वे लाभ का बटवारा 2 : 1 के अनुपात में करते हैं।

   लाभ व हानि विनियोजन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।
8. रोहन और भानू एक फर्म में साझेदार है। मार्च 1, 2006 को पूँजी का शेष निम्न है

विवरण	*रोहन (₹)*	*भानू (₹)*
पूँजी खाता	90,000	1,20,000
चालू खाता	8,000 (नाम)	4,000 (जमा)
आहरण	5,000	6,000

शुद्ध लाभ, पूँजी पर ब्याज और साझेदारों को वेतन देने से पहले ₹ 25,600 हैं। वे निम्न शर्तों पर सहमत हुये :

टिप्पणी

(i) लाभ व हानि को बराबर बाटा जायेगा।

(ii) पूँजी पर 6% ब्याज दिया जायेगा।

(ii) भानू को ₹ 900 प्रति माह वेतन दिया जायेगा।

लाभ हानि विनियोजन खाता और साझेदारों के पूँजी खाते बनाइये।

9. एम और आर के साझेदारी समझौते से निम्न शर्तें उपलब्ध है

(i) लाभ का विभाजन 3 : 2 के अनुपात में होगा।

(ii) एम को ₹ 500 प्रति माह वेतन दिया जायेगा।

(iii) साझेदारों के स्थिर पूँजी खातों पर 8% का ब्याज दिया जाएगा।

(iv) साझेदारों के आहरण पर 6% ब्याज लगाया जाएगा।

(v) एम और आर की स्थिर पूँजी क्रमशः ₹ 2,00,000 और ₹ 1,50,000 है उनके द्वारा क्रमशः ₹ 10,000 व ₹ 12,000 का आहरण किया गया। दिसम्बर 2006 को समाप्त वर्ष के लिये शुद्ध लाभ ₹ 62,000 है।

लाभ-हानि विनियोजन खाता तैयार कीजिए।

10. लाभ की गारन्टी से आप क्या समझते हैं। संक्षेप में वर्णन करो।

11. गत समायोजनाओं का वर्णन करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1 I. (i) दो (ii) समझौता (iii) लिखित (iv) साझेदारी संलेख (v) असीमित

II. (i) नहीं (ii) हाँ (iii) नहीं (iv) नहीं (v) नहीं

22.2 (i) जमा (ii) चालू (iii) स्थिर (iv) जमा (v) नाम

22.3 I. (i) जमा (ii) नाम (iii) आरम्भिक शेष (iv) 6½ माह (v) एक माह

II. पूँजी पर ब्याज रीमा ₹ 6,250 व अनीश ₹ 8,000

III. आहरण पर ₹ 1,100 ब्याज

22.4 (i) साझेदारों को वेतन, साझेदारों को कमीशन, पूँजी पर ब्याज, साझेदारों को ऋण पर ब्याज

(ii) लाभ हानि विनियोजन खाता नाम
लाभ हानि खाता से

टिप्पणी

(iii) आहरण पर ब्याज खाता नाम
लाभ हानि विनियोजन खाता से

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

5. पूँजी पर ब्याज अ ₹ 18,000 और ब ₹ 12,000
6. (i) ₹ 1,040 (ii) ₹ 880 (iii) ₹ 960
7. लाभ का विभाजन नमन ₹ 36,200 असमिता ₹ 18,100 पूँजी खातों में शेष नमन ₹ 1,56,000 और असमिता ₹ 1,20,000
8. लाभ का विभाजन रोहन ₹ 1,100 और भानू ₹ 1,100 चालू खाते में शेष रोहन ₹ 9,500 भानू ₹ 9,100
9. लाभ का विभाजन एम ₹ 17,592 और आर ₹ 11,728

क्रियाकलाप

अपनी सम्प्रेषण योग्यता का उपयोग कर किन्हीं पाँच फर्मों के साझेदारी संलेख प्राप्त कीजिए। इन संलेखों को ध्यान से पढ़िये। उन प्रावधानों की पहचान कीजिए जो एक समान नहीं है। उन बातों का भी पता लगाइए जिन्हें आप एक साझेदारी संलेख में सम्मिलित करना चाहेंगे।

	फर्म का नाम	*वह मदें जो केवल फर्म के लिए हैं*	*सम्मिलित की जाने वाली मदे*
1.			
2.			
3.			
4.			
5.			

उन मदों की सूची तैयार करें जिनको आप साझेदारी संलेख में सम्मिलित करने का सुझाव देगें।

1. .....

2. .....